RNI NO. DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | JAN 2016 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

Pre- Republic Day Celebration

Event club of journalism and mass communication department, Tecnia institute of advanced studies organized PRE- REPUBLIC DAY CELEBRATION On 25th January 2016. The main purpose of the event was to give a startup exposer to the participants of the club, so that they can organize an event later. Students also showcased their talents in the following Events: On the Spot Writing competition, Extempore and Drawing Competition and it also included on the spot event such as singing and poem recitation. The entire fest successful by the cooperation and efforts of Tecnia students under the guidance of the academic Controller, Ms. Nivedita Sharma and HOD DR. Rajesh Aggrawal and full support from faculty and staff members.The main objectives of this event was to Provide club members the practical exposure of organizing an event, enable students to brush up their skills related to event management and also to provide a platform so that they can get inclusion and have confidence in their abilities, and to plan activities that promotes emotional, spiritual, moral and productive development.In Extempore Gaurav Joshi got 1st position while Mr. Harsh Wardhan and Paras Mishra won 2nd & 3rd prize

Tushita Shahni
BJMC, 2nd Year

स्मपादकीय

67 का भारतीय गणतंत्र ...

कहते हैं कि अगर आप समस्याओं की तरफ देखोगे तो समाधान ढूंढना तो दूर सोचना भी दूभर हो जाता है. हालांकि, इसका यह मतलब कतई नहीं है कि आप व्यवहारिकता के धरातल से इतना ऊपर उठकर सोचें कि गिरने पर आपकी हड्डी–पसली एक हो जाए. इसलिए वह चाहे व्यक्ति हो, संस्था हो या देश ही क्यों न हो, उसे वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों पर सटीक नजर रखनी चाहिए तो समाधान की ओर उसके कदम निरंतर ही बढ़ते रहने चाहिए! आजादी के बाद हमारा देश जहाँ आने वाले अगस्त में 70 साल का हो जायेगा, वहीं अपने नियम–कानून के लिए संविधान को अंगीकृत करने का 67 साल 26 जनवरी को मनाया गया। इस बार यह अवसर इसलिए भी विशेष है, क्योंकि देश में नयी सरकार, नयी नीतियों, नए विदेशी सम्बन्ध, नयी योजनाओं का लिटमस टेस्ट हो रहा है. लगभग डेढ़ साल से ज्यादा समय होने को है नरेंद्र मोदी सरकार के और निश्चित तौर पर यह आंकलन होने जा रहा है कि आखिर 67 साल का दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र किस दिशा में जा रहा है? न केवल सरकार के स्तर पर ही, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी कुछ बड़े बदलाव देखने को मिले हैं, जिनमें सहिष्णुता–असहिष्णुता पर व्यापक हंगामा होना प्रमुख है. इस चर्चा ने अनेक संस्थानों को डिबेट में भाग लेने पर लगभग मजबूर कर दिया था. विदेश नीति में भारत के सामने कुछ नए अध्याय खुले हैं तो निश्चित रूप से कुछ पुराने जख्म भी उधड़े हैं. पश्चिमी देशों सहित अफ्रीकी और यूएस से सम्बन्ध मजबूत होते दिखे हैं तो हमारे पड़ोसी नेपाल के साथ सम्बन्ध बुरी तरह बिगड़े है। पाकिस्तान के साथ कुछ नया करने के प्रयास में हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाहौर में सरप्राइज–कूटनीति करने की कोशिश जरूर की, लेकिन पठानकोट में आत्मघाती हमलों ने साल की शुरुआत में ही भारतीय गणतंत्र की पीठ में छूरा घोंप दिया. इस गणतंत्र पर जो सबसे बड़ा सवाल तैरेगा, वह निश्चित रूप से श्पाकिस्तान से निपटनेश के ऐतिहासिक और कूटनीतिक तरीकों पर विचार–विमर्श को केंद्र में लाएगा! नए और महत्वकांक्षी शासक इतिहास को छोडकर भविष्य की ओर बढने की जल्दबाजी जरूर दिखाते हैं, लेकिन पठानकोट जैसे हमले फिर से उसे इतिहास में धकेल देते हैं, इस बात में रत्ती भर भी शक नहीं होना चाहिए!

इस गणतंत्र दिवस पर फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद का मुख्य अतिथि बनना खास था, क्योंकि हाल ही में फ्रांस ने भी बड़ा आतंकी हमला झेल है. निश्चित रूप से चरमपंथी प्रभाव पर भारत और फ्रांस के शीर्ष स्तर नेताओं पर सामरिक साझेदारी के स्तर तक पहुँचने वाली बातचीत की तैयारियां जोरो पर होंगी! वर्तमान सरकार से तमाम मुद्दों पर इसलिए सकारात्मक उम्मीद बंधती है, क्योंकि वह समस्याओं का रोना रोने की बजाय, समाधान की दिशा में तेजी से आगे बढ़ती जा रही है और यही हमारे गणतंत्र को और भी मजबूत बनाने के लिए आवश्यक भी है।

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद वो प्रेरणा हैं जिनके विचार और आदर्श का जिंदगी पर गहरा असर डालते हैं। 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में जन्में विवेकानन्द ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद न रहे। उन्होंने समता के सिद्धान्त का बेहद सरल बौद्धिक आधार दिया। आइये एक नजर डालते हैं स्वामी जी के कुछ खास सिद्धान्तों पर...

1. दिन में एक बार स्वंय से बात करें, अन्यथा आप एक बेहतरीन इंसान से मिलने का मौका चूक जाएंगे।
2. एक बार में सिर्फ एक ही काम करें और उस एक काम में अपनी पूरी बुद्धि और आत्मा लगा दें।
3. जब तक जीना तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।
4. पवित्रता, दृढ़ता तथा उद्यम– ये तीनों गुण मैं एक साथ चाहता हूं।
5. ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है।
6. ऐसा कोई कार्य नहीं है जो इंसान ना कर सके क्योंकि सारा सामर्थ्य और ऊर्जा हमारे अंदर है। आप कुछ भी और सबकुछ कर सकते हैं।
7. इंसान, ईश्वर में तब तक विश्वास नहीं कर सकता, जब तक उसे खुद पर विश्वास ना हो।
8. उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।
9. विवेकानंद ने जीवन में सुरक्षित राह पर चलने की नहीं बल्कि जोखिम उठाने की सीख दी। क्योंकि उनका मानना था कि अगर आप जीते तो आप संचालन करेंगे और अगर हारे तो मार्गदर्शन।
10. व्यक्ति को जीवन की हर परिस्थिति में हमेशा नायक बनना चाहिए और बिना डरे अच्छी–बुरी हर स्थिति का सामना करना चाहिए।

प्रस्तुतिः आकाश चावला
बीजेएमसी, द्वितीय वर्ष

Faculty Entrepreneurship Development Programme

A Faculty Entrepreneurship Development Programme was jointly conducted by National Foundation of Indian Engineers and Tecnia Institute of Advanced Studies from 21st December to 4th January . The programme was being sponsored by Government of India, Ministry of Science and Technology, Department of Science and Technology, National Science and Technology Entrepreneurship Development Board (NSTEDB).Through this training, faculty members learned in Entrepreneurial traits so that they can act as resource persons in guiding and motivating young professionals to be entrepreneurships of tomorrow.

The Faculty Development Programme (FDP) provided inputs on process and practice of entrepreneurship development, communication and inter-personal skills, creativity, problem solving, achievement motivation training and inputs on resource and knowledge industries. The training methodology included witjh case studies, group discussion, games and simulation exercise, field visits and classroom lectures.The main objectives of FDP was to equipping teachers with skills and knowledge that are essential for inculcating entrepreneurial values in students and guiding their interests towards entrepreneurial career.

Faculty members of AICTE Approaved Institutes affiliated with GGSIP University participated in this FDP.

-Himani Mittal
BJMC, 2nd Year

Seminar On Master's Study Options In France

Tecnia Institute of Advanced Studies organized a seminar on Master's study options in France on 21st January 2016 Thursday at Tecnia Auditorium.

Mrs. Golda Malhotra, coordinator India, Srilanka & Nepal was the chief guest of the seminar. Director General Prof (Dr) V. K. Kapoor Presented Momento to Mrs.Golda Malhotra. The main objectives of the seminar are to develop skills in problem solving and with foreign languages; to motivate Students so that they can gab an opportunity to supplement knowledge, learn a new language, discover up coming technologies, obtain high quality training and above all, offer cultural diversity to future managers.

Mrs. Golda Malhotra said that France is one of the most important study-abroad destinations, inviting abundant number of students every year from all over the world. In addition to a good educational experience, studying in France leads to good career opportunities internationally after graduation. France is better known for its high level of technological development, culture and reputation in the education system, which attracts number of young aspirants here every academic year. For many years, France has held its prominent place in subjects like Mathematics, Astrophysics, Biology, Medicine (Medicine in France), Genetics, Physics and other science subjects. Dr. A. K. Rathore, Director, TIAS delivered the Opening Remarks and Mr.M.N Jha, Dean Academic TIAS, Delhi, Delivered Vote of Thanks.

-Priyadish
BJMC, 1st Year

युवक-युवतियों का पसंदीदा पेशा बन रही एडवरटाइजिंग

विज्ञापन की दुनिया ग्लैमर से युक्त सिर्फ एक चमकदार कारोबार ही नहीं है बल्कि विश्व अर्थव्यवस्था को सबसे ज्यादा राजस्व इसी से मिलता है। विज्ञापन की दुनिया अरबों दर्शकों, श्रोताओं और पाठकों को अपने जादुई आकर्षण में बांधे रखती है। व्यवसाय के रूप में यह दुनिया भर के युवक–युवतियों का पसंदीदा पेशा है।

भारत में विज्ञापन का कारोबार दस हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का है और देश भर में 800 से ज्यादा मान्यता प्राप्त विज्ञापन एजेंसियां हैं। आज भारतीय विज्ञापन उद्योग ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी अपनी एक अलग पहचान बना ली है, भले ही यहां तक पहुंचने में उसे एक लंबा सफर तय करना पड़ा हो। विज्ञापन का संसार बहुत बड़ा है। इसके कई क्षेत्र हैं जिसमें हमेशा ही रोजगार के नए अवसर बनते रहते हैं।

एकाउंट प्लानिंग– लेखा नियोजन विभाग का कार्य विज्ञापन के लक्ष्य समूह को समझने और इस तरह समूचे विज्ञापन को विकास प्रक्रिया में प्रदर्शित करने की जिम्मेदारी होती है। यह देखता है कि विज्ञापन लक्षित समूह के लिए काम करे।

लेखा प्रबंधन– यह किसी भी विज्ञापन एजेंसी की रीढ़ की हड्डी मानी जाती है। ये विभाग विज्ञापन एजेंसी और विज्ञापन दाता के बीच मध्यस्थता का कार्य करता है। यह ग्राहक से निर्देश प्राप्त कर एजेंसी की दूसरी शाखा को बताता है। इसके अलावा कंपनी की गुणवत्ता पर भी इसकी नजर होती है।

सृजनात्मक सेवाएं– इस विभाग के तहत कॉपी राइटिंग और ग्राफिक्स विभाग आता है। कॉपी विभाग की जिम्मेदारी विज्ञापन दाताओं के लिए प्रेरणादायक संदेश लिखने की होती है। जबकि ग्राफिक्स विज्ञापन का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है। एक कॉपीराइटर में जहां लेखक के तमाम गुण होने चाहिएं वहीं ग्राफिक डिजाइनर में एक निर्देशक का। मीडिया सेवा– मीडियाकर्मियों के लिए मीडिया बाजार की जानकारी होना आवश्यक है। मीडिया विभाग का काम लक्षित समूह के लोगों की आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त मीडिया का चुनाव करना है।

ट्रैफिक– यह समय सीमा के भीतर कार्य पूरा करने और बाहरी संगठनों जैसे मीडिया हाउस, सप्लायर के साथ तालमेल बनाने का प्रयास करता है। उदारीकरण के बाद बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने से उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा तेजी से बढ़ी है जिसमें अपनी खास भूमिका के साथ विश्वस्तरीय विज्ञापन एजेंसियां सामने आईं। विज्ञापन एजेंसी में आने के इच्छुक अभ्यर्थी इनमें से किसी भी क्षेत्र में जा सकते हैं। लेकिन हर क्षेत्रों के लिए अलग–अलग योग्यता की जरूरत है। लेखा नियोजन के लिए व्यवसायिक प्रशासन और समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि उपयुक्त है। मीडिया नियोजन के लिए अभ्यर्थी को अर्थशास्त्र और सृजनात्मक क्षेत्र के लिए लेखन का ज्ञान होना चाहिए।

विज्ञापन के क्षेत्र में कॅरियर बनाने के इच्छुक अभ्यर्थी के लिए विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अलग–अलग पाठ्यक्रम हैं। जिनमें नामांकन के लिए योग्यता भी अलग–अलग है। लेकिन ज्यादातर पाठ्यक्रम स्नातक अभ्यथियों के लिए ही हैं इस पाठ्यक्रम में दाखिला प्रवेश परीक्षा या फिर मेरिट के आधार पर मिलता है। ज्यादा जानकारी इन शिक्षण संस्थानों से हासिल की जा सकती है–

1. राजेन्द्र प्रसाद इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड कम्युनिकेशन, मुंबई। 2. स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन मैनेजमेंट स्टडीज, कोचीन, केरल। 3. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवरटाइजिंग, नई दिल्ली। 4. भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली। 5. वाइएमसीए सेंटर फॉर मास मीडिया, नई दिल्ली। 6. भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली। 7. डिपार्टमेंट ऑफ जर्निलस्म एंड कम्युनिकेशन, नासिक। 8. आचार्य प्रफुल्ल चंद्र कॉलेज, 24 परगना, पश्चिम बंगाल।

प्रस्तुतिः करूणा, बीजेएमसी, प्रथम वर्ष

जय हो जय हो मां सरस्वती

जय हो जय हो मां सरस्वती
जय हो वीणावादिनी बजा के वीणा
तू हमें ज्ञान की धुनों से भर दे
देके सद्गुणों का वरदान दूर
अवगुणों से कर दे
हम हैं तेरे बालक नादान हे मां
दे दे कुछ हमको भी तू ज्ञान
जय हो जय हो मां सरस्वती
जय हो वीणावादिनी
हे हंसवाहिनी हे बह्माणी
हे सुरपूजीता हे मां शारदे
रखती हो सभा में लाज तुम उसका
जो तुम्हें दिल से पुकार दे
हम भी तेरे बालक हैं मां तू हमको
भी तो तारदे
जय हो जय हो मां सरस्वती
जय हो वीणावादिनी
दे मां ज्ञान का दान तू खाली
झोली हमारी भरदे
सुना है तुम हो बड़ी दयावान मां
अनपढ़ों को भी मिलता है जगत में
सम्मान जब कर कृपा तुम देती हो
विद्या का वरदान मां
सब की सुनती हो अरज मां कब
आयेगी मेरी बारी
आज आके सभा बीच रखलो लाज
हमारी
करे विनती तुम से बस यही ये बेटा
तुम्हारा ठेठबिहारी

–रामप्रकाश तिवारी

जीएसटी पर अटकी मोदी सरकार की सांसें

दुनिया भर में घूम–घूमकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत में निवेश करने के प्रस्तावों की जो लुभावनी तस्वीर खींची है अब उसकी परीक्षा की घड़ी है. प्रधानमंत्री अब विपक्ष का समर्थन जुटाने में लगे हैं।

संभावित विदेशी निवेशकों और स्वयं भारतीय कॉरपोरेट जगत, जिसने मोदी को चुनावों में दोनों हाथों से खुला समर्थन दिया है, उसे बेचैनी से इस बात का इंतजार है कि भारतीय संसद में जीएसटी विधेयक पारित होता है कि नहीं. जीएसटी या वस्तु और सेवा कर एक ऐसी अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है जिसे वस्तु और सेवाओं के उत्पादन, उपभोग और बिक्री पर लगाया जाना है. इसे मोदी सरकार के आर्थिक सुधारों का सबसे बड़ा एजेंडा माना जा रहा है. इसका उद्देश्य पूरे देश में समरूप बाजार व्यवस्था का निर्माण करना है. अगर एक बार ये लागू कर दिया जाता है तो इससे कर प्रणाली में समरूपता आ जाएगी और इसके बाद केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा लगाये जाने वाले दूसरे सारे अप्रत्यक्ष करों की व्यवस्था अपनेआप ही खत्म हो जाएगी. आर्थिक सुधारों के पक्षधर अर्थशास्त्रियों का मानना है कि इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सुधार आएगा और जीडीपी यानी सकल घरेलू उत्पाद में दो प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी संभव है. दावा किया जा रहा है कि जीएसटी लागू होने से सरकार के वित्तीय घाटे में कमी आएगी और उपभोक्ता वस्तुओं के दाम भी घटेंगे जिससे मुद्रास्फीति की दर भी कम होगी।

वाणिज्यिक संस्थान एसोचौम ने विश्वव्यापी आर्थिक मंदी को देखते हुए इसे भारत के लिये ब्रह्मास्त्र करार दिया है. बीजेपी की भी पूरी कोशिश है कि संसद के इस शीतकालीन सत्र में किसी भी तरह से जीएसटी विधेयक पारित हो जाए ताकि एक अप्रेल से शुरू होने वाले अगले वित्तीय वर्ष में इसे लागू किया जा सके लेकिन राज्यसभा में आंकड़े उसके पक्ष में नहीं है।

जीएसटी एक संविधान संशोधन विधेयक है और इसे पारित करने के लिये संसद के दोनों सदनों का अलग–अलग दो तिहाई बहुमत जरूरी है. सत्ताधारी बीजेपी के सामने पसोपेश ये है कि लोकसभा में तो विधेयक पारित हो गया जहां वो विशाल बहुमत में है लेकिन राज्यसभा में वो अल्पमत में है और विधेयक को पारित कराने के लिये उसे कांग्रेस की मानमनौव्वल करनी पड़ेगी. मोदी सरकार इस विधेयक को लेकर कितनी बेचैन है वो इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को इस विधेयक पर विश्वास में लेने के लिये विशेष रूप से चाय पर आमंत्रित किया गया।

अत्यंत अभिमानी समझे जाने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कितनी मजबूरी में ये कदम उठाना पड़ा होगा इसका अंदाजा लगाया जा सकता है. लेकिन मोदी के लिये मनमोहन सिंह और सोनिया गांधी को मनाना आसान नहीं होगा क्योंकि कांग्रेस ने विधेयक के चार महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर अपनी राय सार्वजनिक कर दी है– पहला राज्यों को एक प्रतिशत अतिरिक्त कर लगाने का अधिकार, कांग्रेस इसका विरोध कर रही है क्योंकि इससे सिर्फ गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्यों को ही फायदा होगा. दूसरा कांग्रेस का कहना है कि जीएसटी के रेट के लिये अधिकतम 18 प्रतिशत की सीमा होनी चाहिये ताकि गरीब और कम आय वर्ग के लोगों पर इसका अधिक बोझ न पड़े और तीसरा जीएसटी से संबंधित मुद्दों को सुलझाने के लिये स्वतंत्र अधिकरण की स्थापना हो. चौथा कांग्रेस की मांग ये भी है कि तंबाकू, शराब और बिजली की आपूर्ति को भी जीएसटी के दायरे में लाया जाए जो कि विधेयक के मौजूदा प्रारूप से बाहर है. कांग्रेस इन पर समझौता करने के लिये शायद ही तैयार हो।

उल्लेखनीय है कि जीएसटी लागू करने के लिये तत्कालीन यूपीए सरकार ने ही पहल की थी और तब बीजेपी ने इसका विरोध किया था और आज इसे पारित और लागू करवाना बीजेपी के लिये टेढ़ी खीर साबित हो रहा है. असल में आर्थिक उदारवाद को अपनाने के बाद कांग्रेस की पिछली सरकारें हों या बीजेपी की पूर्व और आज की सरकार हो, दोनों की नीतियां एक विशाल मध्यवर्ग, उच्चवर्ग और कॉरपोरेट को तो किसी न किसी रूप से सहलाने थपकाने की रही हैं लेकिन देश की कम आय वाली, गरीब और वंचित जनता के लिए इन दलों और इनके आर्थिक पैरोकारों के पास कोई न एजेंडा नजर आता है न उनके कल्याण का कोई सूत्र।

–बाल कृष्ण मिश्र

दलितों में आत्मविश्वास, अधिकारों के लिए सचेत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दलित भारतीय व्यापार मंडल की सभा में कहा कि उनकी सरकार वित्तीय सहभागिता और पिछड़ों के सशक्तिकरण के लिए काम कर रही है. कुलदीप कुमार का कहना है कि दलित अपने अधिकारों के लिए सचेत हो गए हैं।

दलितों के मसीहा माने जाने वाले भीमराव रामोजी अंबेडकर के प्रति अचानक सबका प्यार उमड़ आया है. जिन अंबेडकर ने 1935 में ही कह दिया था कि हालांकि उनका जन्म एक हिन्दू के रूप में हुआ है, पर वह एक हिन्दू के रूप में मरेंगे नहीं, उन्हीं अंबेडकर को आज वह हिंदुत्ववादी भारतीय जनता पार्टी हाथों–हाथ लिए हुए है जो अंबेडकर द्वारा बनाए धर्मनिरपेक्ष संविधान के प्रति शपथ लेने के बाद भी भारत को एक हिन्दू राष्ट्र मानती है और उसे हिन्दू राष्ट्र बनाने पर तुली हुई है. इसी तरह जिन अंबेडकर ने जीवन भर कांग्रेस और उसके सर्वोच्च नेता महात्मा गांधी का विरोध किया, उन्हीं अंबेडकर को आज कांग्रेस पार्टी गले लगाने के लिए बेचौन है. कांग्रेस ने तो अपने पार्टी संविधान में संशोधन करके सभी स्तर पर पचास प्रतिशत पद अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित कर दिये हैं. यही नहीं, पार्टी उपाध्यक्ष राहुल गांधी के निर्देश पर कांग्रेस की सभी राज्य इकाइयां दिसंबर 2015 से मार्च 2016 तक अंबेडकर की "असली विचारधारा" से अपने दलित एवं अन्य निचली जातियों के नेताओं को परिचित कराने के लिए सम्मेलन आयोजित कर रही हैं. आखिर अंबेडकर में ऐसा क्या है कि भाजपा हो या कांग्रेस, सभी उन्हें अपना बनाने यानी उनकी राजनीतिक विरासत को हथियाने के लिए अधीर हो रहे हैं?

इस बेचौनी और अधीरता के पीछे अंबेडकर के प्रति प्रेम या उनकी विचारधारण के प्रति निष्ठा नहीं, शुद्ध चुनावी गणित है. कांग्रेस का आकलन है कि उसे लोकसभा चुनाव में जो ग्यारह करोड़ वोट मिले, उनमें से लगभग एक–तिहाई दलितों और आदिवासियों के थे. उसकी कोशिश है कि यदि यह प्रतिशत बढ़े न, तो कम भी न हो. उत्तर प्रदेश में वर्ष 2017 के आरंभ में विधानसभा चुनाव होने हैं और वहां अंबेडकरवाद की प्रबल प्रचारक मायावती की बहुजन समाज पार्टी अन्य सभी पार्टियों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है. भले ही अपने आचरण में मायावती अंबेडकर के सिद्धांतों पर चलती नजर न आती हों, लेकिन उनके विरोधी भी यह मानने के लिए मजबूर हैं कि बसपा के संस्थापक और मायावती के राजनीतिक गुरु कांशीराम और मायावती के प्रयासों के फलस्वरूप दलितों में एक नया आत्मविश्वास और उत्साह जगा है. दलित समाज अब किसी और की मदद का मोहताज नहीं. वह अपने पैरों पर खड़ा होना सीख रहा है. कांग्रेस को मायावती से यह खतरा है कि वह उसके और दलित वोटों को अपनी ओर खींच कर न ले जाएं. पिछले तीन दशकों में कांग्रेस का दलित वोट मायावती की ओर और मुस्लिम वोट मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी की ओर खिंचा है जिसके कारण कभी उत्तर प्रदेश पर राज करने वाली कांग्रेस अब वहां तीसरे–चौथे नंबर की पार्टी बन कर रह गई है. उधर दिल्ली और बिहार में करारी हार के बाद भाजपा के लिए उत्तर प्रदेश का चुनाव जीवन–मरण का प्रश्न बन गया है. उसकी कोशिश है कि दलित उसे अपना हमदर्द समझें. इसीलिए वह अंबेडकर के हिन्दू धर्म और जातिप्रथा संबंधी कटु आलोचनात्मक विचारों को नजरंदाज करके उन्हें अपने प्रेरणास्रोतों में शामिल करती हुई दिखना चाहती है।

लेकिन इन दोनों पार्टियों की रणनीति के सफल होने की संभावना काफी कम है. अब अखबार, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलिविजन और सामाजिक मीडिया के कारण अशिक्षित दलित भी अपनी स्थिति और अधिकारों के प्रति पहले की अपेक्षा बहुत अधिक सचेत हो गए हैं. उन्हें भरमाना उतना आसान नहीं रह गया था. फिर मायावती पर भ्रष्टाचार के चाहे जितने आरोप लगें, वह उनके अपने बीच से उभरी हुई नेता हैं और उनके एक बार फिर मुख्यमंत्री बनने की संभावना है. इसलिए उनका दलित जनाधार कम होने के बजाय बढ़ने की ज्यादा उम्मीद है. अन्य राज्यों में भी दलित वहीं कांग्रेस या भाजपा की ओर रुख करेगा जहां कोई दलित पार्टी या नेता नहीं है. इसके पीछे उसका लक्ष्य राजनीतिक संरक्षण प्राप्त करना होगा और उसे यह भ्रम कतई नहीं होगा कि ये पार्टियां मनुवादी नहीं, अंबेडकरवादी हो गई हैं. पार्टी में दलितों के लिए पद आरक्षित करने से आम दलित जन आकृष्ट होंगे, इसमें संदेह है. अब दलित सत्ता से संरक्षण, मदद या समर्थन नहीं, सत्ता में प्रत्यक्ष भागीदारी चाहते हैं. जब तक कांग्रेस और भाजपा जैसे दलों में राष्ट्रीय स्तर के प्रभावशाली दलित नेता नहीं होंगे, तब तक दलित वोट उनकी ओर आकृष्ट नहीं होगा।

प्रस्तुतिः शुभम महन्दीरत्ता
बीजेएमसी, प्रथम वर्ष

भारतीय सांसद भी कर सकते हैं गंभीर चर्चा

राज्यसभा में किशोर न्याय विधेयक पर गंभीर चर्चा हुई. सभी दलों के नेताओं के भाषण और संजीदा बहस के बाद उसे पास कर दिया गया. कुलदीप कुमार का कहना है कि इस बहस ने संसदीय लोकतंत्र और भारतीय सांसदों की परिपक्वता दिखाई है।

आम तौर पर लोग संसद में होने वाले हंगामों से ही परिचित हैं, लेकिन आज संसद की कार्यवाही देखने वालों को यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ होगा कि हमारे सांसद यदि चाहें तो वे बेहद गंभीर चर्चा भी कर सकते हैं. किशोर न्याय विधेयक के पक्ष और विपक्ष में बोलने वाले सांसदों ने आज जिस संजीदगी और गंभीरता के साथ विधेयक के एक–एक वाक्य पर विचार किया और सरकार को अपने सुझाव दिये, उससे देश के संसदीय लोकतंत्र के भविष्य के प्रति आश्वस्ति होती है।

राज्यसभा में चर्चा की पृष्ठभूमि में पिछले कुछ दिनों से राजधानी दिल्ली में चल रहे प्रदर्शन हैं जो तीन साल पहले चलती बस में एक युवती के साथ हुए नृशंस बलात्कार के दोषी के रिहा किए जाने के विरोध में किए जा रहे हैं. बलात्कार के दौरान पाशविक हिंसा करने वालों में एक सत्रह साल का किशोर भी शामिल था जो अभी इसी महीने बाल सुधार गृह से रिहा हुआ है. अभी तक के कानून के मुताबिक 18 वर्ष से कम उम्र का अपराध करने वाला बालक ही माना जाता है और अपराध चाहे कितना भी जघन्य क्यों न हो, उसे तीन साल से ज्यादा की सजा नहीं दी जा सकती. और यह सजा भी वह जेल में नहीं, बाल सुधार गृह में रहकर काटता है।

जनमत के दबाव में सरकार ने लोकसभा में एक नया किशोर न्याय विधेयक पेश किया और पारित कराया. राज्यसभा द्वारा पारित होने के बाद अब सिर्फ राष्ट्रपति के दस्तखत की देर है कि यह विधेयक कानून में बदल जाएगा. इस विधेयक में यह प्रावधान है कि यदि बलात्कार जैसा जघन्य अपराध करने वाला व्यक्ति 16 और 18 वर्ष के बीच की उम्र का हो, तो उस पर बालिग की तरह मुकदमा चलाया जा सकता है और तीन वर्ष के बजाय सात वर्ष तक की सजा दी जा सकती है. विधेयक में यह सावधानी बरती गई है कि किसी भी सूरत में दोषी को फांसी या उम्रकैद की सजा नहीं दी जाएगी और उसे जेल में अपराधियों के साथ नहीं रखा जाएगा।

विधेयक के आलोचकों का तर्क है कि जिन देशों में भी इस तरह के कानून बने हैं, वहां किशोरों के द्वारा किए जाने वाले गंभीर अपराधों में कोई खास कमी नहीं आई है. दूसरे, उनका सवाल है कि क्या न्याय का लक्ष्य दोषी से बदला लेना है या उसे सुधारना है. खासकर तब, जब अपराध करने वाला अपरिपक्व मानसिकता का किशोर हो. उनका यह भी कहना है कि जनता की मांग पर कानून में बदलाव करना भीड़ की मानसिकता को बढ़ावा देना है. लेकिन विधेयक के समर्थकों का तर्क है कि देश में बाल सुधार गृह भी इतनी खराब हालत में हैं कि वहां रहकर किसी के सुधारने की गुंजाइश जरा कम ही है. साथ ही, यदि कोई किशोर वयस्कों की तरह बलात्कार जैसा जघन्य अपराध करता है तो उसे क्यों न वयस्कों की तरह ही सजा भी दी जाए।

राज्यसभा में सांसदों ने विधेयक की बारीकी से समीक्षा की और अपने सुझाव दिए. आशा की जानी चाहिए कि भविष्य में सभी मुद्दों पर इसी तरह से गंभीर बहस होगी और सांसदों के अच्छे सुझावों को विधेयक में जगह दी जाएगी. विधेयकों पर बहस के माध्यम से मुद्दों पर देशव्यापी बहस का जन्म होता है जिससे भविष्य में और बेहतर कानून बनाने का रास्ता खुलता है।

–बाल कृष्ण मिश्र

This Month

January 30, 1835 - President Andrew Jackson survived the first assassination attempt on a U.S. President. While leaving the House of Representatives Chamber, an insane would-be assassin fired two pistol shots at him, however both pistols misfired and the president was unharmed.

*****

January 10, 1861 - Florida became the third state to secede from the Union in events leading up to the American Civil War.

*****

January 11, 1861 - Alabama seceded from the Union in events leading to up the American Civil War.

*****

January 1, 1863 - The Emancipation Proclamation by President Abraham Lincoln freed the slaves in the states rebelling against the Union.

*****

January 10, 1863 - The world's first underground railway service opened in London, the Metropolitan line between Paddington and Farringdon.

*****

January 15, 1870 - The first use of a donkey to symbolize the Democratic Party in America appeared in a cartoon in Harper's Weekly, criticizing former secretary of war Edwin Stanton with the caption, "A Live Jackass Kicking a Dead Lion."

*****

Compilation: Ms. Honey Shah

Basics of Media

Sweetening : Variety of quality adjustments of recorded sound in post production.

*****

Volume Unit (VU) Meter : Measures volume units, the relative loudness of amplified sound.

*****

Auto Transition : An electronic device that functions like a fader bar.

*****

Bus : A row of buttons on the switcher.

*****

Delegation Controls : Controls on the switcher that assign specific functions to a bus.

*****

Downstream Keyer (DSK) : A control that allows a title to be keyed (cut in) over the picture (line-out signal) as it leaves the switcher.

*****

Effects Buses : Program and preview buses on the switcher, assigned to perform effects transitions.

*****

Fader Bar : A lever on the switcher that activates preset transitions, such as dissolves, fades, and wipes, at different speeds. It is also used to create superimpositions.

*****

Compilation: Rahul Mittal

GGSIP University organise prelims of Anugoonj

Guru Gobind Singh Indraprastha University organises prelims for its Annual cultural festival Anugoonj. The prelims were organised at Guru Nanak Institute of Management(West Punjabi Bagh). Anugoonj had activities from all the fields such as Music, Fine arts, Cultural activities, Literary and many more. The prelims were held for two consecutive days on 28th and 29th of January. Nearly 90 colleges participated in the Prelims. The Prelims had witnessed many young talents and had a very tough competition in all the activities. Colleges from Delhi NCR participated in the event and participants were very enthusiastic to show there the event had activities like One act play, Nach baliye, Street dance, Choreography, Classical vocal solo, Light vocal(Indian), Group song(Indian), Quiz, Debate(English and Hindi), just a minute (English and Hindi), on 28th Jan and Battle of bands, Folk dance, Foot loose, Classical dance, Mr. and Ms. Anugoonj 2016, Western vocal(Solo), Garoup Song(western) Poetry recitation(English and Hindi), Rangoli, Street play, Mono acting, Creative writing(English and Hindi),Collage and clay modelling on 29th Jan. Tecnia Institute of Advanced Studies, Maharaja Agrasen Institute of Advanced Studies, Maharaja Agrasen Institute of Technology, Special arts school, Bhagwan Parshuram Institue of Technology and Bhartiya Vidya Peeth seized most of the event. In, Classical solo event Maharaja Agrasen Institute of Advanced Studies secured the first position, Bhagwan Parshuram Institue of Technology second position and , Special arts school third position. On the second day of event Bhagwan Parshuram Institue of Technology won the Battle of bands and ESIC the first runner up. In the Western music solo Bhagwan Parshuram Institue of Technology secured the first position Maharaja Agrasen Institute of Advanced Studies second and Jagan Nath Institute of Management third position. The event witnessed fine piece of acts in Just a minute where Bhartiya Vidya Peeth secured first position. Tecnia Institute of Advanced Studies student Bhavik was also praised a lot in the All the students came out with flying colours. The Prelims has raised a lot of expectations from the participants and a rocking festival is foreseen and Guru Gobind Singh Indraprastha University is ready for the Goonj of Anugoonj.

-Gaurav Joshi, BJMC, 2nd Year

Vol. 12 **No.** 1
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"Everybody pities the weak; jealousy you have to earn."
Arnold Schwarzenegger
*****

"Against stupidity, the gods themselves contend in vain."
Friedrich von Schiller
*****

"We have art to save ourselves from the truth."
Friedrich Nietzsche
*****

"Never interrupt your enemy when he is making a mistake."
Napoleon Bonaparte
*****

"Human history becomes more and more a race between education and catastrophe."
H. G. Wells
*****

"Talent does what it can; genius does what it must."
Edward George Bulwer-Lytton
*****

"If you are going through hell, keep going."
Sir Winston Churchill
*****

Compilation: Ms. Bhavna Madan Vij

Winners V/s Loosers

Part-54

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would, not want them to do to you"; Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you."
*****

The Winner is always part of the answer; The Loser is always part of the problem.
*****

The Winner always has a program; The Loser always has an excuse.
*****

The Winner says, "Let me do it for you"; The Loser says, "That is not my job."
*****

The Winner sees an answer for every problem; The Loser sees a problem for every answer.
*****

to be continued in next issue

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at youngster@tecnia.in